# Kharif POP: Black Gram

Download

Document outlining Package of Practices for Black Group cultivation

- Read report on Black Gram Cultivation

# Read report on Black Gram Cultivation

<u>खरीफ पी.ओ.पी.</u>

**25** डिसमिल जमीन के लिए

उद्देश्य:

- झारखंड में उरद खरीफ मौसम में की जाने वाली एक प्रमुख दलहन फसल है।
- उरद की खेती एकल या मिश्रित या अंतर्वर्ती फसल तीनों तरीके से की जाती है।

खरीफ में उरद की खेती करने का समय:

झारखंड में उरद की बुआई का उचित समय 15 जून से 15 जुलाई माना जाता है ।

उरद के लिए जमीन का प्रकार:

- झारखंड की टांड़- 2 नंबर जमीन उरद की खेती के लिए उपयुक्त है |
- ढाल वाली जमीन होनी चाहिए,जिसमें जल निकासी की व्यवस्था हो।

उरद के उत्पादन की महत्वपूर्ण बातें :

1. बीज के उन्नतकिस्म का चुनाव
   उरद के बीज़ का चुनाव पुष्ट और एक समान आकार के दानों का करना चाहिए |उरद के उन्नत बीज़ का उपयोग संभावित उपज को सुनिश्चित करता है |

उरद की मुख्य किस्में (प्रभेद):-

- ✔ उरद की उन्नत किस्में 75 से 85 दिनों में तैयार हो जाती हैं |
- ✔ उरद की प्रमुख किस्में - पंत उरद 31 (PU-31),IPU2-43, T-9, बिरसा उरद 1 इत्यादि है |



बीज की छंटाई, उपचार एवं लेपन : -

- केवल पुष्ट बीज, एक रंग एवं एक आकार का बीज चुनना चाहिए | इसके लिए चलनी एवं सूप की मदद से खराब बीज़ और दूसरे अनावश्यक वस्तुओं को हटा देते हैं |
- उरद की फसल को मिट्टी एवं बीज जनित रोगों से बचाव के लिए बीज को बिजामृत 50 मि.ली. प्रति

- पहली निकाई 20 से 25 दिनों में और दूसरी निकाई 35 से 40 दिनों में करना चाहिए | निकाई के समय 20 लीटर जीवामृत को मिटी से मिलाके देना है |

उरद फसल में रोग प्रबंधन :

| | | |
|---|---|---|
| पीला मोजेइक रोग<br> | • यह एक विषाणु जनित रोग है जो पौधे के मुलायम पत्तियों पर पीले हरे रंग के चितकबरे धब्बे बनाते है।<br>• रोग ग्रसित पत्तियाँ अंत में पुरी पीली हो जाती है।<br>• रोग ग्रसित हो जाने के बाद पौधों में छिमि/ फली (pod) नहीं आता है । | रोग ग्रसित पौधों को खड़ी फसल से निकाल कर नष्ट कर दे एवं पूरे फसल में ब्रह्मास्त्र 0.5 ली./ 20 ली. पानी के साथ घोल कर 10 दिनों के अंतराल पर 2 बार छिड़काव करें। |
| पत्ती का चित्ती रोग (सर्कोस्पोरा लीफ स्पॉट):<br> <br> | • यह बीज जनित फफूंद से होता है|<br>• इस रोग से ग्रसित पौधोंकीपत्तियों पर छोटे-छोटे गोलकत्थइ रंग के धब्बे दिखाई देते है|<br>• धब्बों के बीच का भाग धूसर रंग या भूरा हो जाता है|<br>• बाद में धब्बे सब आपस में मिलकर अनियमित आकार के बड़े बड़े धब्बे बन जाते है और पत्तियाँ झुलस कर गिर पड़ते है| | 0.5 लीटर जीवामृत को 20 पानी में मिलकर छिडकाव करने से इस तरह की फफूंद से निजात पाया जाता है | |

उरद फसल में कीट प्रबंधन:



| | | |
|---|---|---|
| फली छेदक कीट (Pod Borer)<br> | इस कीट से उरद के फसल को सबसे ज्यादाक्षति होता है| फली छेदक किट | इस कीट के नियंत्रण के लिए जैविक दवाई में – आग्नेयास्त्र या ब्रम्हास्त्र का प्रयोग 30 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर 10 दिनों के अंतराल पर 2 बार |

औसत उपज:

औसत उपज (झारखण्ड): 1.0 MT/ha

औसत उपज (इंडिया): 0.56MT /ha

25 डिसमिल जमीन में 90 से 100किलो उपज की संभावना है।

उरद खेती की कुछ विशेष बातें:

- ✔ उरद की फसल मिश्रित या अंतर्वर्ती फसल के रूप में करना चाहिए |
- ✔ मकई की फसल के साथ उरद की मिश्रित खेती सही चुनाव होता है |
- ✔ मडुवा  की फसल के साथ उरद की मिश्रित खेती काफी सही माना जाता  है |

अन्य विशेष बातें

- अप्रैल से मई महीने में खेत की गरमा जुताई 6 इंच गहराई तक करनी चाहिए |
- खेत को जुताई एक बार उत्तर से दक्षिण और दूसरी बार पूर्व से पश्चिम दिशा में करनी चाहिए | इससे मिट्टी जनित बीमारियों का प्रकोप की संभावना घटती है | इससे मिट्टी हल्की होती है और वर्षा का पानी जमीन में ज्यादा रिसता है |

I----I